DECLINE OF ROMAN EMPIRE-2

FOR:U.G.PART-1,PAPER-2

BY:ARUN KUMAR RAI

ASST.PROFESSOR

P.G.DEPT.OF HISTORY

MAHARAJA COLLEGE

ARA.

रोमन साम्राज्य का पतन

- ***सेवाइन*** ने लिखा है कि रोम का पतन क्रमिक और आधारभूत परिवर्तन था न कि आकिस्मक भरी अशांति से उथल-पुथल। रोमन साम्राज्य के पतन में तीन शताब्दियों से भी अधिक समय लगा । ***प्रो. विल डयूरेंट*** ने लिखा है -जितने दिन रोम के पतन में लगे इतने दिनों तक कुछ राष्ट्र जीवित भी नहीं रह सकते थे।

रोमन साम्राज्य के पतन के कारण

- इतिहासकार फग्र्यूसन तथा ब्रून ने रोमन साम्राज्य के पतन के चार प्रमुख कारण बताएं है:

1. आर्थिक असंतोष
2. सामाजिक प्रतिक्रिया
3. राजनीतिक भ्रष्टाचार
4. सैन्य- तंत्र वाद

आर्थिक असंतोष

1.सम्राटों एवं सुखी –सम्पन्न नागरिकों का विलासमय जीवन- रोमन साम्राज्य के सम्राट और सुखी संपन्न नागरिक धीरे-धीरे विलासी हो गए और विलास के सामग्रियों के भोग में लिप्त हो गये। देश के विपुल राशि का इस्तेमाल विलासमय सामग्रियों को खरीदने में होने लगा फलतःधन की कमी हुई जिसका प्रभाव शासन तथा सैन्य व्यवस्था पर पड़ा।

आर्थिक असंतोष

- **कृषि की अवनति** – सामंतों के भवन निर्माण एवं निर्माण कार्यों में दासों के प्रयुक्ति करने की वजह से कृषि की अवनति हुई जिसने आर्थिक विपन्नता को जन्म दिया। सामंत भूमि के स्वामी थे तथा कृषि उन्नति हेतु धनराशि खर्च कर सकते थे लेकिन उनकी प्राथमिकता बदली ।निर्माण कार्य में दासों के लगने से कृषि कार्य हेतु मजदूरों का अभाव हो गया। कृषि जन्य पदार्थों के निर्यात में कमी से विदेशों से धन आना बंद हो गया तथा साम्राज्य के अंतर्गत वितरण बंद होने से आमजन प्रभावित हुये।

आर्थिक असंतोष

- पूर्वी साम्राज्य की तुलना में पश्चिमी साम्राज्य के व्यापार और उद्योग धंधे अधिक विकसित नहीं थे ।इस कारण साम्राज्य की आमदनी प्रभावित हुई। पश्चिमी रोमनो नें उत्पादन में वृद्धि ,उद्योगों के विकास हेतु मानसिकता का विकास नहीं किया। सुसंगठित अर्थव्यवस्था के अभाव के कारण साम्राज्य के व्यवसाय ठप पड़ गए। इससे बेरोजगारी बढ़ी।

आर्थिक असंतोष

- रोमन साम्राज्य की मुद्रा प्रणाली भी प्रभावित हुई। आयातित सामग्रियों का मूल्य चुकाने हेतु रोमन व्यापारी ने स्वर्ण तथा रजत के रूप में मुद्रा पूर्वी देशों को भेजते थे जिससे इसमें कमी आई ।सरकार को सस्ती धातु के सिक्के ढालने पड़े जिससे महंगाई बढ़ी। व्यापार स्थानीय समुदाय तक सिमट गया।

आर्थिक असंतोष

- भारी कराधान- साम्राज्य की जनता भारी करों के बोझ से दबी थी जिसके कारण लोगों की आय प्रभावित हुई। आय में कमी से क्रय शक्ति घटी ।क्रय शक्ति घटने से मुनाफा प्रभावित हुआ फलत: आगामी कराधान प्रभावित हुआ ।भारी कर ने व्यापार ,कृषि तथा उद्योग धंधों के विकास को प्रभावित किया।

आर्थिक असंतोष

- <u>आय का असमान वितरण</u>- आय के असमान वितरण ने सामाजिक असंतोष को जन्म दिया ।गरीबी तथा बेकारी की समस्या ने सामाजिक कलह को जन्म दिया। रोमन शासक वर्ग इसे रोक नहीं पाए जिससे जनता उदासीन रहने लगी।
- समृद्ध रोमनों की बड़ी-बड़ी जागीरें आत्मनिर्भर हो गई जिससे समाज की केंद्रीय शक्ति को गहरा आघात लगा ।

आर्थिक असंतोष

- जागीरदार कर संग्रह करने लगे तथा अलग पुलिस रखने लगे ।गरीब किसान रोमन सम्राट के प्रति निष्ठावान न रहकर जागीरदारों के प्रति निष्ठावान रहने लगी। इसका बुरा प्रभाव पड़ा।

सामाजिक प्रतिक्रिया

- आरम्भ में लोगों को अपने जीवन स्तर को ऊंचा करने एवं वर्ग परिवर्तन करने का अधिकार था किंतु तीसरी सदी के उपरांत स्वेच्छाचारी रोमन शासकों ने उनकी स्वतंत्रता छीन ली तथा समस्त छूट एवं रियायतें को खत्म कर दिया। वर्ग तथा जाति का निर्धारण वंश से किया जाने लगा।
- नगर के व्यापारी तथा शिल्पी को आर्थिक संकट के समय विशेष प्रकार का कर सरकार को देने पड़ते थे।इसको लेकर ये वर्ग असंतुष्ट थे।

सामाजिक प्रतिक्रिया

- रोमन सम्राट के नियमों से क्यूरीआल्स (म्यूनिसिपैलिटी के उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के लोगों) का पद वंशानुगत बना दिया ।क्यूरिया(कर वसूलने वाला) कर वसूली न कर पाने की स्थिति में नियमों के तहत उसे स्वयं अपनी धनराशि वहन करना पड़ता था ।उसे शहर छोड़ने की मनाही कर दी गई ।वह संपत्ति बिक्री नहीं कर सकता। इसको लेकर दोनों में असंतोष व्याप्त हो चला।

राजनीतिक भ्रष्टाचार

- राजनीतिक और प्रशासनिक स्वेच्छाचारिता तथा भ्रष्टाचार ने समाज के पतन को अवश्यंभावी बना दिया। शासकों की निरंकुशता से जनता असंतुष्ट रहने लगी ।सम्राट ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया तथा विशाल साम्राज्य के कुशल संचालन हेतु संविधान का निर्माण भी नहीं किया।

राजनीतिक भ्रष्टाचार

- उत्तरार्ध काल में रोमन साम्राज्य भ्रष्टाचार का शिकार हो गया। सम्राटों की मानसिक शक्ति कुंठित हो गई और साम्राज्य लडखडाने लगा। विघटनकारी ताकतों को रोक पाने में शासक विफल रहे अतः शासन में ढिलाई एवं बुराई आती चली गई जिससे उसका स्थायित्व प्रभावित हुआ।

राजनीतिक भ्रष्टाचार

- शासन के पतन में उत्तराधिकार नियमों का अभाव भी शामिल था ।प्रतिद्वंदी शासकों ने गृह युद्ध को बढ़ावा दिया।235ई.से285ई. तक के समय में रोम में 26 सम्राटों ने शक्ति के बल पर साम्राज्य पर अधिकार किया और इनमें से एक शासक के सिवाय सभी की हत्या कर दी गई ।इस प्रकार इस गृह युद्ध से साम्राज्य की स्थिरता को धक्का लगा और उसके जड़े खोखली हो गए।

सैन्य तंत्र वाद

- रोमन साम्राज्य के अशांति के काल में सैन्य स्वेच्छाचारिता बढ़ जाती। शासन का वास्तविक संचालक सेना के बड़े बड़े सैन्य अधिकारियों के हाथ में आ जाता था। सैन्य पदाधिकारी इतनी प्रभावशाली हो गए कि वे सम्राटों को पदासीन एवं पदच्युत भी करने लगे।
- कुलीन परिवारों के स्थान पर परवर्ती काल में निम्न वर्गीय लोगों को सेना में भर्ती से भक्ति एवं त्याग की जगह

सैन्य तंत्र वाद

स्वार्थी एवं नीजि अर्जन की भावना फैलने लगी। सैनिक अत्याचारी हो गए जिससे प्रजा में आतंक फैला।192ई.-284ई. के बीच उन 40 रोमन सम्राट सैन्य हिंसक प्रवृत्ति के शिकार बने।

- सम्राटों ने भी सैन्य विकास विशेषकर नौसेना पर ध्यान नहीं दिया फलतः बर्बरआक्रमणों ने साम्राज्य के पतन को नजदीक ला दिया।

सैन्य तंत्र वाद

- रोम के विशाल साम्राज्य की सुरक्षा के लिए एक विशाल सेना का निर्माण किया गया। इस सेना में भिन्न-भिन्न प्रदेशों के व्यक्ति भर्ती किए गए ।रोम साम्राज्य की सेना में भिन्न-भिन्न जातियों , धर्म,और वर्गों की व्यक्ति थे परिणाम स्वरूप सेना में एकता नहीं रही। ***प्रोफेसर डेविस*** ने लिखा है कि ऐसी सेना शक्ति का साधन होने की अपेक्षा दुर्बलता का कारण बन गई। रोम की सेना सत्ता की परवाह ना कर उस पक्ष की ओर से लड़ने को तैयार रहते थे जो उन्हें धन प्रदान करता था।

ईसाई धर्म का प्रचार

- रोमन साम्राज्य के पतन के लिए सम्राट कान्सटेन्टाईन और इसाई धर्म उत्तरदाई था। ***गिबन एवं नित्शे*** ने लिखा है कि- ईसाई धर्म के प्रचार से रोम के निवासियों का राज भक्तित्व साहस नष्ट हो गया।
- ईसाई धर्म के प्रचार से पहले रोमन प्रजा सम्राट को ही ईश्वर समझकर उसकी पूजा करती थी, किंतु ईसाई धर्म नें सम्राट की पूजा का विरोध किया।

ईसाई धर्म का प्रचार

- सम्राट कांसटेनटाइन ने एवं अन्य रोमन जनता ने जब ईसाई धर्म को स्वीकार किया तो उन्होंने सम्राट की पूजा का विरोध किया और सम्राट की आज्ञा के स्थान पर ईसाई धर्म के आदेशों को अधिक पालन करने लगे परिणाम स्वरूप साम्राज्य की एकता को धक्का लगा
- ईसाई धर्म के प्रभाव से रोम की जनता अहिंसक, संतोषी और भावी जीवन के लिए अधिक चिंतित रहने लगी।

ईसाई धर्म का प्रचार

जिसके फलस्वरूप रोम की सैनिक शक्ति का पतन होने लगा ।रोम में ईसाई धर्म का प्रचार ही उसके विनाश का कारण नहीं था क्योंकि इस धर्म का प्रचार रोम में उस समय हुआ जब रोमन साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो रहा था।

विदेशियों का लगातार आक्रमण

- रोम आंतरिक रुप से खोखला हो चुका था। ऐसे समय में उत्तरी सीमा पर बर्बर जर्मन कबीलों जिनमें मूर,अरब ईरानी ,जर्मन, गॉथ, फ्रांक हूण तथा वांडल जैसे बर्बरो के आक्रमण ने पतोन्मुख साम्राज्य को धराशाई कर दिया। ***विलड्रस*** ने लिखा है कि- किसी भी महान सभ्यता को बाहर से नहीं जीता जा सकता जबकि वह आंतरिक रूप से दुर्बल ना हो जाए।